REET 2025
LEVEL-1 & 2
ROJGAR WITH ANKIT
वंदन बैच
हिंदी
सतत् एवं समग्र मूल्यांकन
LIVE
10-01-2025 11:00 AM

सतत एवं समग्र मूल्यांकन की विशेषताएँ

- **1. सतत (Continuous):-** इसका अर्थ है कि मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है जो पूरे शिक्षण-प्रक्रिया के दौरान होती है।
- **उदाहरण:-** शिक्षार्थी के गृहकार्य, परियोजना कार्य, कक्षा कार्य, और मौखिक उत्तरों का निरंतर मूल्यांकन करना।

- **2. समग्र (Comprehensive):-** इसका अर्थ है कि मूल्यांकन शिक्षार्थी के शैक्षिक और सह-शैक्षिक दोनों पहलुओं का आकलन करता है।
- **उदाहरण:-** केवल गणित और विज्ञान में प्राप्त अंकों के आधार पर मूल्यांकन न करके, खेल, नृत्य, कला, और नैतिक गुणों का भी आकलन करना।
- **3. बहु-आयामी मूल्यांकन:-** इसमें विविध विधियों का उपयोग किया जाता है,
- **जैसे-** लिखित परीक्षा, मौखिक परीक्षा, प्रेक्षण, समूह गतिविधियाँ, और परियोजना कार्य।

- **4. समाज और नैतिक मूल्यों का समावेश-** इसमें नैतिक गुणों,
- **जैसे-** ईमानदारी, सहयोग, नेतृत्व क्षमता आदि का मूल्यांकन किया जाता है।
- उदाहरण के साथ व्याख्या:-
- **1. सतत मूल्यांकन:-**
- **उदाहरण:-** शिक्षक हर सप्ताह एक छोटा सा टेस्ट लेते हैं और प्रत्येक बच्चे की प्रगति को नोट करते हैं।
- इस प्रक्रिया में शिक्षक यह देखते हैं कि विद्यार्थी में कौन-सी अवधारणाएँ स्पष्ट हो चुकी हैं और किन पर और अधिक काम करने की आवश्यकता है।

2. समग्र मूल्यांकन:

उदाहरण:- एक विद्यार्थी जो गणित और विज्ञान में कमजोर है, लेकिन खेलकूद में अच्छा प्रदर्शन करता है। शिक्षक उसे केवल अकादमिक प्रदर्शन के आधार पर नहीं आंकते, बल्कि उसकी खेल-कूद में दक्षता को भी महत्व देते हैं।

निपुण

3. परियोजना आधारित मूल्यांकन:

उदाहरण:- बच्चों को "पर्यावरण संरक्षण" पर एक प्रोजेक्ट बनाने के लिए कहा जाता है। इसमें बच्चे टीम बनाकर काम करते हैं, जिससे उनके नेतृत्व और सहयोग के गुणों का आकलन किया जाता है।

4

4. सह-शैक्षिक गतिविधियाँ:-

उदाहरण:- बच्चों को कक्षा में नृत्य, संगीत, चित्रकला आदि में भाग लेने का अवसर दिया जाता है, और शिक्षक उनकी रचनात्मकता और रुचियों का मूल्यांकन करते हैं।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन

CCE का उद्देश्य (Detailed Objectives):-

- **1. सीखने की प्रक्रिया में सुधार:-** सतत मूल्यांकन के माध्यम से छात्रों की सीखने की कमजोरियों और क्षमताओं को पहचानकर, शिक्षकों को बच्चों के सीखने के तरीके को समायोजित करने का अवसर मिलता है।
- **2. समग्र विकास पर जोर:-** शैक्षणिक ज्ञान के साथ-साथ सामाजिक, भावनात्मक, और नैतिक गुणों का विकास।
- **3. परीक्षा-आधारित तनाव को कम करना:-** छात्रों को केवल एक ही परीक्षा पर निर्भर न रखते हुए, उनके पूरे वर्ष के प्रदर्शन का आकलन किया जाता है।

- **4. समय पर प्रतिक्रिया:-** सतत प्रक्रिया होने के कारण, छात्रों और अभिभावकों को समय पर फीडबैक दिया जाता है, जिससे सुधार की दिशा में काम किया जा सकता है।

CCE की उपयोगी विधियाँ और उनका महत्व

- **1. प्रेक्षण (Observation):-** शिक्षक कक्षा में बच्चों की गतिविधियों, उनके कार्यों, और उनके व्यवहार को देखकर मूल्यांकन करते हैं।

- **उदाहरण:-** कक्षा में समूह चर्चा के दौरान छात्रों के सहयोग और नेतृत्व कौशल का आकलन करना।
- **2. प्रश्नोत्तर (Question-Answer):-** मौखिक प्रश्नों के माध्यम से बच्चों की समझ और तर्क क्षमता का मूल्यांकन किया जाता है।
- **उदाहरण:-** कक्षा में "जल का महत्व" पर चर्चा करके उनकी सोचने और तर्क देने की क्षमता को देखना।
- **3. परियोजना कार्य (Project Work):-** बच्चों को किसी विषय पर गहराई से जानकारी जुटाने और उसे प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है।

- **उदाहरण:-** "पुनर्चक्रण (Recycling)" पर परियोजना तैयार करना।
- इसमें बच्चे सामग्री पुन: उपयोग करने की प्रक्रिया समझते हैं और इसे रचनात्मक तरीके से प्रस्तुत करते हैं।

4. सह-शैक्षिक गतिविधियाँ (Co-Curricular Activities):-

- इनमें खेल, नृत्य, संगीत, कला, और अन्य रचनात्मक क्रियाएँ शामिल हैं।
- **उदाहरण:-** नृत्य प्रतियोगिता के दौरान बच्चों के आत्मविश्वास का मूल्यांकन।
  - ड्रामा या नाटक में उनकी भावनात्मक और संवाद क्षमताओं को परखना।

5. डायरी लेखन (Diary Writing):

- इसमें छात्र अपनी दैनिक गतिविधियों और विचारों को लिखते हैं। यह उनकी लेखन क्षमता और आत्म-चिंतन का मूल्यांकन करने का एक तरीका है।

6. रूपांतरण कार्य (Remedial Work):

- मूल्यांकन के आधार पर छात्रों की कमजोरियों की पहचान करके उन्हें सुधारने के लिए उपाय किए जाते हैं।
- **उदाहरण:** यदि कोई छात्र गणित के किसी विशेष विषय में कमजोर है, तो अतिरिक्त अभ्यास कार्य दिए जाते हैं।

CCE का वर्गीकरण:

1. आकर्षक मूल्यांकन (Formative Assessment):-

- सीखने के दौरान निरंतर मूल्यांकन।

उदाहरण:-

- कक्षा चर्चा
- छोटी-छोटी परीक्षा
- खेल गतिविधियाँ

2. सारांशात्मक मूल्यांकन (Summative Assessment):

एक निश्चित समय के बाद (जैसे—छमाही या वार्षिक) होने वाला मूल्यांकन।

उदाहरण:

- वार्षिक परीक्षा
- छमाही प्रोजेक्ट

CCE के लाभ (Advantages):

1. बच्चों के बहुआयामी विकास को प्रोत्साहन।
2. केवल परीक्षा के आधार पर बच्चों का आकलन न करते हुए, उनकी रचनात्मकता, नेतृत्व और अन्य गुणों का आकलन।
3. कमजोर विद्यार्थियों के लिए समय रहते सुधार के उपाय।
4. सीखने को तनावमुक्त और रोचक बनाना।

CCE के सिद्धांत (Principles of CCE)

1. अलग-अलग तरीकों का उपयोग:

- CCE केवल लिखित परीक्षाओं तक सीमित नहीं है। इसमें मौखिक, प्रायोगिक, प्रेक्षण, और सह-शैक्षिक गतिविधियाँ भी शामिल हैं।

2. समय पर प्रतिक्रिया (Timely Feedback):

- शिक्षकों द्वारा छात्रों को नियमित और सकारात्मक प्रतिक्रिया देकर उनकी कमजोरियों और सुधार के क्षेत्रों को बताया जाता है।

- **3. सीखने में रुचि का विकास:-** CCE का मुख्य उद्देश्य छात्रों में सीखने की रुचि पैदा करना और इसे एक रचनात्मक अनुभव बनाना है।
- **4. व्यक्तिगत ध्यान:-** प्रत्येक छात्र की क्षमताओं और कमजोरियों के आधार पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना।
- **5. संतुलित मूल्यांकन:-** शैक्षणिक (ज्ञान) और गैर-शैक्षणिक (सामाजिक, नैतिक, भावनात्मक) दोनों का आकलन करना।

CCE का कार्यान्वयन (Implementation of CCE)

- 1. छात्रों की नियमित निगरानी - छात्रों के दैनिक कार्यों, उनकी कक्षा में सहभागिता, और उनकी प्रस्तुतियों का मूल्यांकन करना।
- 2. मूल्यांकन उपकरण (Assessment Tools)- चेकलिस्ट (Checklist): शिक्षकों द्वारा छात्रों के प्रदर्शन की एक सूची।
- रेटिंग स्केल (Rating Scale): छात्रों के कार्य का स्तर निर्धारित करने के लिए।
- रुब्रिक्स (Rubrics):- एक मानक ढांचा जो छात्रों के प्रदर्शन का मापन करता है।

3. डेटा संग्रह:- छात्रों की गतिविधियों और उनकी प्रगति का रिकॉर्ड बनाए रखना।

4. सकारात्मक दृष्टिकोण:- शिक्षकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि छात्रों का आकलन केवल उनकी कमियों को दिखाने के लिए न हो, बल्कि उन्हें प्रेरित करने और उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए हो।

CCE के विस्तृत लाभ (Expanded Advantages):

- **1. व्यक्तिगत विकास पर जोर :-** हर छात्र के व्यक्तिगत गुणों और क्षमताओं को पहचानकर उनके विकास पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।
- **2. समाजोपयोगी गुणों का विकास:-** नेतृत्व क्षमता, समूह में काम करने की योग्यता, और नैतिक गुणों का आकलन।
- **3. सहायक शिक्षण-प्रक्रिया:-**
  - शिक्षक और छात्र के बीच बेहतर संवाद।
  - शिक्षण विधियों में सुधार।

- **4. सीखने की विविधता:-** छात्रों के लिए सीखने की प्रक्रिया को रोचक और व्यावहारिक बनाना।
- **उदाहरण:** छात्रों को केवल पाठ याद करने की जगह उसे अनुभव करने और लागू करने का अवसर देना।

CCE के प्रमुख उदाहरण (Detailed Examples):

1. गतिविधि आधारित मूल्यांकन:

उदाहरण:- शिक्षक छात्रों को "पौधों के भागों" पर एक गतिविधि करने को कहते हैं। बच्चे पौधों को लाते हैं, उनके भागों को पहचानते हैं और उनकी उपयोगिता बताते हैं।

मूल्यांकन:-

- छात्रों के पर्यवेक्षण कौशल।
- उनके मौखिक प्रदर्शन।
- उनके प्रोजेक्ट की प्रस्तुति।

2. समस्या समाधान आधारित मूल्यांकन (Problem-Solving):

उदाहरण:- गणित में छात्रों को 'पानी के टैंक भरने की गति' पर एक समस्या दी जाती है।

मूल्यांकन:-

- उनकी समस्या को समझने की क्षमता।
- तर्क और गणना कौशल।

3. सह-शैक्षिक मूल्यांकन:

उदाहरण:-

- खेलकूद प्रतियोगिता आयोजित करना और छात्रों के खेल-कौशल, टीमवर्क, और अनुशासन का मूल्यांकन।

4. समूह परियोजना:

उदाहरण:

- "स्वच्छ भारत अभियान" पर पोस्टर बनाना।

मूल्यांकन:

- रचनात्मकता।
- टीम में काम करने की क्षमता।
- विषय की समझ।

CCE को मुख्यत: दो भागों में बाँटा गया है:

1. आकर्षक मूल्यांकन (Formative Assessment - FA):-

यह मूल्यांकन शिक्षण प्रक्रिया के दौरान किया जाता है। इसका उद्देश्य छात्रों को सीखने में सहायता प्रदान करना और शिक्षण-प्रक्रिया में सुधार करना है।

विशेषताएँ:-

- लघु परीक्षण (Quiz)।
- मौखिक प्रश्न-उत्तर।
- चर्चा और गतिविधियाँ।
- गृहकार्य और कार्यपत्र।

- **उदाहरण:-** यदि शिक्षक कक्षा में "जल का चक्र" पढ़ा रहे हैं, तो वे बीच में छात्रों से सवाल पूछ सकते हैं, जैसे:-
  - जल चक्र के कौन-कौन से चरण हैं?
- वर्षा कैसे होती है?
  - यह छात्रों की अवधारणाओं को स्पष्ट करने और उनकी समझ को मापने में मदद करता है।

2. सारांशात्मक मूल्यांकन (Summative Assessment - SA):-

यह एक निश्चित समय अंतराल के बाद किया जाने वाला मूल्यांकन है, जैसे— छमाही और वार्षिक परीक्षा। इसका उद्देश्य यह पता लगाना है कि छात्रों ने पूरे पाठ्यक्रम से क्या सीखा।

विशेषताएँ:-

- लिखित परीक्षाएँ।
- प्रोजेक्ट प्रस्तुतियाँ।
- परिणाम-आधारित मूल्यांकन।

उदाहरण:

- वार्षिक परीक्षा में छात्रों से "जल का चक्र" पर एक विस्तृत उत्तर लिखने के लिए कहा जाता है।

CCE के विस्तृत घटक (Components of CCE):-

1. शैक्षिक मूल्यांकन (Scholastic Assessment):

- यह उन गतिविधियों का आकलन करता है जो अकादमिक प्रदर्शन से संबंधित हैं।
  - विषयों में छात्र की प्रगति का आकलन।
  - लिखित और मौखिक कार्य।
  - विज्ञान प्रयोगशाला, गणितीय समस्याएँ।

2. सह-शैक्षिक मूल्यांकन (Co-Scholastic Assessment):

यह उन पहलुओं का आकलन करता है जो छात्र के समग्र व्यक्तित्व विकास में योगदान करते हैं।

- खेल-कूद।
- कला और संगीत।
- नैतिक शिक्षा।
- नेतृत्व क्षमता और टीमवर्क।

3. व्यक्तित्व मूल्यांकन (Personality Assessment):-

- यह छात्रों के सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक गुणों का आकलन करता है।
    - आत्म-अनुशासन।
    - सहयोग और सामूहिकता।
    - जिम्मेदारी और नेतृत्व।

CCE के प्रमुख लाभों का विस्तार (Additional Benefits)

1. परीक्षा का तनाव कम:-

- छात्रों को केवल एक बड़ी परीक्षा पर निर्भर नहीं रहना पड़ता, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है।

2. अभिभावकों के लिए फीडबैक:-

- CCE के माध्यम से शिक्षक अभिभावकों को बच्चों की प्रगति और सुधार के क्षेत्रों की जानकारी दे सकते हैं।

3. सामाजिक और नैतिक मूल्यों का विकास:-

- CCE छात्रों को समाज और नैतिकता से जोड़े रखता है, जिससे उनका व्यक्तित्व समग्र रूप से विकसित होता है।

4. व्यक्तिगत जरूरतों को पहचानना:-

- प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत जरूरतों को समझकर उनकी क्षमताओं का विकास किया जा सकता है।

5. शिक्षा में नवीनता:- यह प्रणाली शिक्षण में नए और रचनात्मक तरीकों को प्रोत्साहित करती है, जैसे—प्रोजेक्ट वर्क, गतिविधियाँ और खेल।

CCE में मूल्यांकन के तरीके (Methods of Assessment):

1. लिखित मूल्यांकन (Written Assessment):-

- विषय आधारित प्रश्न और उत्तर।
- उद्देश्यपूर्ण और वर्णनात्मक प्रश्न।

2. मौखिक मूल्यांकन (Oral Assessment):-

- छात्रों से मौखिक रूप से प्रश्न पूछना।
- उनकी त्वरित प्रतिक्रिया और अवधारणाओं को समझने की क्षमता का परीक्षण।

3. व्यवहार मूल्यांकन (Behavioral Assessment):

- छात्रों के व्यवहार, नैतिकता, और अनुशासन का प्रेक्षण।

4. प्रदर्शन मूल्यांकन (Performance Assessment):

- समूह में कार्य करने की क्षमता।
- प्रोजेक्ट और गतिविधियों की प्रस्तुति।

5. सहपाठियों द्वारा मूल्यांकन (Peer Assessment):

- समूह कार्य में छात्रों को उनके साथी छात्रों द्वारा रेटिंग दी जाती है।

6. स्व-मूल्यांकन (Self-Assessment):

- छात्रों को यह अवसर दिया जाता है कि वे खुद अपने प्रदर्शन का आकलन करें।

CCE के कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ

- 1. शिक्षकों का अपर्याप्त प्रशिक्षण:
  - कई शिक्षक CCE के उपकरणों और प्रक्रियाओं को समझने में सक्षम नहीं होते।
- समाधान: नियमित कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- 2. छात्रों की अधिक संख्या:-
- बड़ी कक्षाओं में हर छात्र का व्यक्तिगत आकलन करना कठिन हो सकता है।
- समाधान: सहायक शिक्षकों की नियुक्ति और डिजिटल तकनीकों का उपयोग।

3. रिकॉर्ड बनाए रखने की कठिनाई:-

- प्रत्येक छात्र का लगातार रिकॉर्ड रखना समय-साध्य हो सकता है।
- समाधान: डिजिटल उपकरणों और सॉफ्टवेयर का उपयोग।

4. पारदर्शिता की कमी-

- कभी-कभी शिक्षक व्यक्तिगत पक्षपात दिखा सकते हैं।

समाधान:- मूल्यांकन में स्पष्ट मापदंडों का उपयोग।

CCE से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य (Key Facts for REET):

1. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) 2005 के अनुसार

- CCE का उद्देश्य छात्रों के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करना है।

2. कक्षा शिक्षण और मूल्यांकन का संबंध:

- CCE प्रणाली शिक्षण और मूल्यांकन को जोड़कर शिक्षा को एकीकृत करती है।